

Original Article

INDIAN FOLK PAINTING: CULTURAL HERITAGE AND CONTEMPORARY RELEVANCE

भारतीय लोक चित्र कलारू सांस्कृतिक धरोहर एवं समकालीन प्रासंगिकता

Dr. Rani Sharma ¹

¹ Bundelkhand University Jhansi, India



ABSTRACT

English: Indian folk painting is a vibrant reflection of India's cultural consciousness, evolving from prehistoric cave paintings to diverse traditions such as Madhubani, Patachitra, Warli, Phad, Aipan, Pithora, Tanjore, and Kohbar. These art forms are primarily created by rural and tribal women using natural dyes (rice powder, turmeric, kohl, and ochre), household implements (fingers, twigs, rice balls), and ephemeral surfaces (battered clay walls, cloth, and paper).

The basic form of folk painting is ritualistic and auspicious, integral to agricultural marriage, fasting, crop cycle, child birth and community festivals. Madhubani art of Mithila is rich in depictions of Ram-Sita marriage, constellations, panels and tantra-mantra, while Patachitra of Odisha presents Ragamala, Bhagavata Purana and social satire. Warli art of Maharashtra depicts community unity through triangular human figures and cycle of nature. Phad paintings of Rajasthan bring alive the heroic tales of Bhomia deity and folk heroes. The Aipan and Alpana arts of Gujarat and Uttar Pradesh, rich in geometric symbols, are symbols of land worship and house warming.

This research paper presents an analysis of the following dimensions of folk painting:

Historical Development: From the seal paintings of the Indus Valley Civilization to colonial surveys Symbolic Semantics': Religious and social meanings of the colors red, white, and black, auspicious symbols such as the swastika, lotus, and fish Technological Features: Ephemera, Mass Creation, and Oral Tradition Contemporary Changes: Tourism Marketing, Canvas Adaptation, Digital Printing, and Sixth-Art Adaptation In the era of globalization, folk painting is facing numerous challenges—depletion of natural dyes, fragmentation of artisan communities, violations of intellectual property rights, and environmental threats. However, these arts are undergoing a creative resurgence. Conservation efforts by institutions like the Jagdish Mittal Foundation, inclusion in the National Intangible Cultural Heritage List of the National Academy of Sciences, and participation in global biennales are restoring their relevance.

This paper offers a comparative analysis of regional variations, a reinterpretation of cultural meanings, and suggestions for conservation policies. It highlights the potential for providing creative continuity to folk painting through cultural tourism, educational curriculum, and community empowerment.

Hindi: भारतीय लोक चित्रकला भारतवर्ष की सांस्कृतिक चेतना का जीवंत प्रतिबिंब है जो प्रागैतिहासिक गुफा चित्रों से विकसित होकर मधुबनीए पटचित्रए वारलीए फड़ए ऐपणए पिथौराए तंजौर एवं कोहबर जैसी विविध परंपराओं में प्रकट हुई। ये कला रूप मुख्यतः ग्रामीण एवं आदिवासी महिलाओं द्वारा प्राकृतिक रंगों, चावल

*Corresponding Author:

Email address: Dr. Rani Sharma (ranishrma16@gmail.com)

Received: 20 December 2025; Accepted: 17 January 2026; Published 27 February 2026

DOI: [10.29121/granthaalayah.v14.i2SCE.2026.6753](https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v14.i2SCE.2026.6753)

Page Number: 159-162

Journal Title: International Journal of Research -GRANTHAALAYAH

Journal Abbreviation: Int. J. Res. Granthaalayah

Online ISSN: 2350-0530, Print ISSN: 2394-3629

Publisher: Granthaalayah Publications and Printers, India

Conflict of Interests: The authors declare that they have no competing interests.

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Authors' Contributions: Each author made an equal contribution to the conception and design of the study. All authors have reviewed and approved the final version of the manuscript for publication.

Transparency: The authors affirm that this manuscript presents an honest, accurate, and transparent account of the study. All essential aspects have been included, and any deviations from the original study plan have been clearly explained. The writing process strictly adhered to established ethical standards.

Copyright: © 2026 The Author(s). This work is licensed under a [Creative Commons Attribution 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

का पीसणए हल्दीए काजलए गेरूद्धए घरेलू औजारों (उंगलियाँए टहनियाँए चावल की रोटियाँ) एवं क्षणभंगुर सतहों (कच्ची मिट्टी की भित्तियाँए वस्त्रए कागज) पर सृजित होते हैं।

लोक चित्रकला का मूल स्वरूप अनुष्ठानिक एवं मांगलिक हैकृविवाहए व्रतबंदीए फसल चक्रए बाल जन्म एवं सामुदायिक उत्सवों से अभिन्न। मिथिला की मधुबनी कला राम.सीता विवाहए नक्षत्र.फलक एवं तंत्र.मंत्र चित्रण से समृद्ध हैए जबकि ओडिशा के पटचित्र रागमालाए भागवत पुराण एवं सामाजिक व्यंग्य प्रस्तुत करते हैं। महाराष्ट्र की वारली कला त्रिकोणीय मानवाकृतियों एवं प्रकृति चक्र से सामुदायिक एकता दर्शाती है। राजस्थान के फड़ चित्रण भोमिया देवता एवं लोक नायकों की वीर गाथाओं को जीवंत करते हैं। गुजरात.उत्तर प्रदेश की ऐपण एवं अल्पना कलाएँ ज्यामितीय प्रतीकों से समृद्ध होकर भूमि.पूजन एवं गृह.प्रवेश के प्रतीक हैं।

यह शोध पत्र लोक चित्रकला के निम्नलिखित आयामों का विश्लेषण प्रस्तुत करता हैरू ऐतिहासिक विकास'रू सिंधु घाटी सभ्यता के मुहर चित्रों से औपनिवेशिक सर्वेक्षणों तक प्रतीकात्मक अर्थमीमांसा'रू लाल.सफेद.काला रंगों का धार्मिक.सामाजिक अर्थए स्वस्तिक.कमल.मछली जैसे मांगलिक प्रतीक तकनीकी विशेषताएँ'रू क्षणभंगुरताए सामूहिक सृजन एवं मौखिक परंपरा समकालीन परिवर्तन'रू पर्यटन बाजारीकरणए कैनवास अनुकूलनए डिजिटल प्रिंटिंग एवं NFT कला रूपांतरण वैश्वीकरण के दौर में लोक चित्रकला अनेक चुनौतियों का सामना कर रही हैकृप्राकृतिक रंगों का हासए शिल्पी.समुदायों का विखंडनए बौद्धिक संपदा अधिकारों का उल्लंघन एवं पर्यावरणीय खतरे। तथापि ये कलाएँ सृजनात्मक पुनरुत्थान के दौर से गुजर रही हैं। जगदीश मित्तलए JDS फाउंडेशन जैसे संस्थानों द्वारा संरक्षण कार्यए UNESCO की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर सूची में समावेश एवं वैश्विक बायेनालों में उपस्थिति इनकी प्रासंगिकता को पुनर्स्थापित कर रही है।

यह शोध पत्र क्षेत्रीय विविधता का तुलनात्मक विश्लेषणए सांस्कृतिक अर्थों की पुनर्व्याख्या एवं संरक्षण नीतियों हेतु सुझाव प्रस्तुत करता है। लोक चित्रकला को सांस्कृतिक पर्यटनए शिक्षा पाठ्यक्रम एवं समुदाय सशक्तिकरण के माध्यम से सृजनात्मक निरंतरता प्रदान करने की संभावनाएँ रेखांकित करता है।

Keywords: Indian Folk Painting, Madhubani, Warli, Natural Colors, भारतीय लोक चित्रकला, मधुबनी, वारली, प्राकृतिक रंग

प्रस्तावना

भारत की लोक चित्रकला केवल दृश्य सौंदर्य का साधन नहीं, बल्कि सामुदायिक स्मृति, आस्था और सामाजिक संरचना की दृश्य भाषा है। यह कला लिखित ग्रंथों से पहले मौखिक परंपरा के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी संचारित हुई। ग्रामीण जीवन के अनुष्ठानए कृषि-चक्र, लोकदेवता, प्रकृति-पूजन और पारिवारिक संस्कार-इन सबका समेकित रूप लोक चित्रों में दृष्टिगोचर होता है। औपनिवेशिक काल में इन्हें 'लोक' या 'नैव' कहकर हाशिये पर रखा गया; किंतु उत्तर-औपनिवेशिक विमर्श में इनकी सांस्कृतिक, सामाजिक और सौंदर्यात्मक महत्ता पुनर्स्थापित हुई।

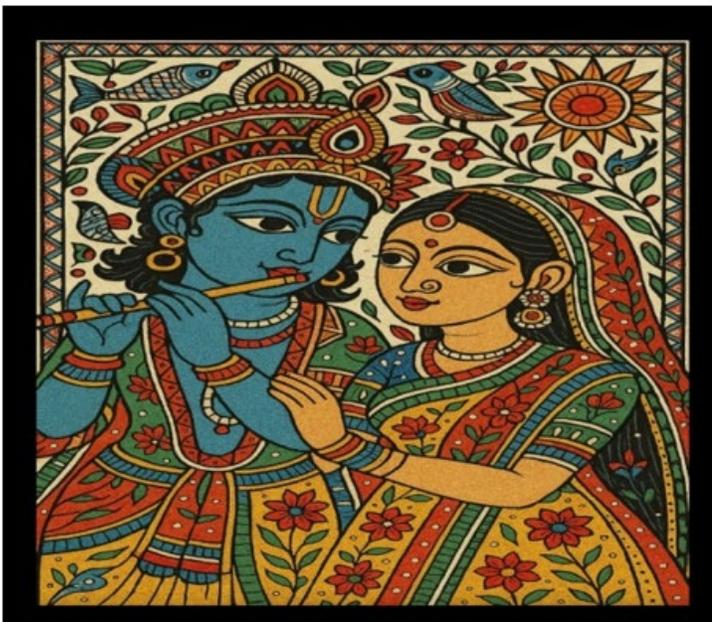
यह शोध पत्र भारतीय लोक चित्रकला की बहुलता को एक समग्र परिप्रेक्ष्य में रखता है- कृतिहास से समकालीन डिजिटल रूपांतरण तककृऔर यह प्रतिपादित करता है कि लोक चित्रकला आज भी जीवंत है, बशर्ते संरक्षण, नीति और समुदाय-केंद्रित दृष्टि अपनाई जाए।

ऐतिहासिक विकास: प्रागैतिहास से औपनिवेशिक काल तक

भारतीय चित्र परंपरा का आरंभ प्रागैतिहासिक शैलचित्रों से माना जाता हैए जहाँ मानव-जीवन, शिकार, नृत्य और अनुष्ठान अंकित हैं। सिंधु घाटी सभ्यता की मुहरों पर प्रतीकात्मक पशु, ज्यामिति और देव-आकृतियाँ लोक-प्रतीकात्मकता की निरंतरता दर्शाती हैं। वैदिक-उत्तर वैदिक काल में यज्ञीय प्रतीक, मंडल और ज्यामिति ने लोक-चित्र भाषा को समृद्ध किया।

मध्यकाल में भक्ति आंदोलन के साथ लोक आख्यानों, रामकथा, कृष्णलीला और लोकदेवताओं का प्रसार हुआ। राजाश्रय प्राप्त दरबारी कलाओं के समानांतर लोक चित्रकला ने जनजीवन की सच्चाइयों को सहेजा। औपनिवेशिक काल में सर्वेक्षणों और संग्रहालयीकरण ने लोक कलाओं को दस्तावेज़ित किया, परंतु कई बार बाज़ार-उन्मुख दृष्टि से उनकी मौलिकता प्रभावित हुई।

चित्र 1



चित्र 1 क्षेत्रीय परंपराएँ: एक तुलनात्मक दृष्टि

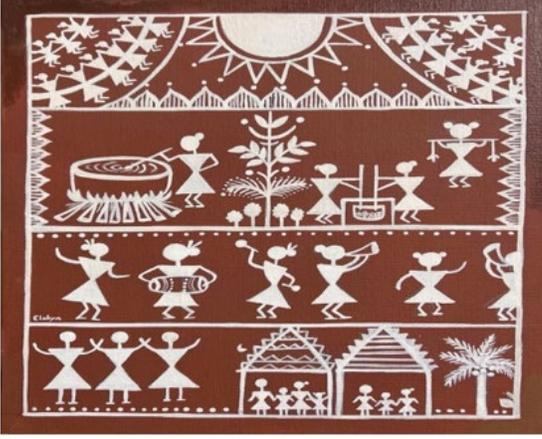
मिथिला (मधुबनीद्ध)

मिथिला की मधुबनी चित्रकला घरेलू भित्तियों से कागज़ और कैनवास तक आई। राम-सीता विवाह, कोहबर, नक्षत्र-फलक और तांत्रिक प्रतीक इसकी पहचान हैं। सघन रेखांकन, समतल रंग और रिक्त-स्थान का अभाव इसकी शैलीगत विशेषताएँ हैं।

ओडिशा (पटचित्रद्ध)

पटचित्र में रागमालाएँ भागवत आख्यान और सामाजिक व्यंग्य मिलते हैं। प्राकृतिक रंग, कपड़े/पट पर कथात्मक क्रम और सुस्पष्ट सीमांकन इसकी पहचान है।

चित्र 2



चित्र 2

महाराष्ट्र (वारलीद्ध)

वारली की त्रिकोणीय मानवाकृतियाँ, वृत्ताकार नृत्य (तरपाद्धएँ) कृषि और प्रकृति-चक्र सामुदायिक एकता का दृश्य रूप प्रस्तुत करते हैं। श्वेत रंग और मिट्टी की पृष्ठभूमि इसका सौंदर्य-विन्यास रचते हैं।

चित्र 3



चित्र 3

राजस्थान (फड़)

फड़ चित्रण कपड़े पर लोकदेवताओं और वीर-गाथाओं की चलित कथा है। यह दृश्य-नाट्य परंपरा गायन-पाठ के साथ संपन्न होती है।

उत्तराखंडधुत्तर भारत (ऐपण/अल्पना)

ज्यामितीय प्रतीकों-स्वस्तिक, कमल, चौक-से युक्त ऐपण/अल्पना भूमि-पूजन और गृह-प्रवेश से जुड़ी है।

मध्य भारत (पिथौरा)

पिथौरा चित्र आदिवासी देवताओं प्रकृति और सामुदायिक अनुष्ठानों का साक्ष्य हैंय सामूहिक सृजन इसकी आत्मा है।

प्रतीकात्मक अर्थमीमांसा

लोक चित्रों में रंग, आकृति और प्रतीक बहुस्तरीय अर्थ वहन करते हैं। लाल उर्वरता और शक्तिय श्वेत शुद्धता और शांतिय काला संरक्षण और रहस्य का संकेतक है। स्वस्तिकए कमलए मछलीए सूर्य.चंद्र जैसे प्रतीक मांगलिकताए समृद्धि और जीवन.चक्र को रेखांकित करते हैं। प्रतीकात्मकता स्थिर नहींय वह स्थानीय विश्वासों और समयानुसार पुनर्व्याख्यायित होती रहती है।

तकनीकी विशेषताएँ

लोक चित्रकला की तकनीकें सरल किंतु अर्थगर्भित हैं। प्राकृतिक रंगों की तैयारी, घरेलू औजारों का उपयोग, क्षणभंगुर सतहें और सामूहिक सृजन-ये सब इसे अनौपचारिक शिक्षा का माध्यम बनाते हैं। मौखिक परंपरा के कारण शैलीगत विविधता बनी रहती है, जबकि सामुदायिक सहभागिता कलात्मक अधिकार को साझा करती है।

समकालीन परिवर्तन और बाज़ारीकरण

पर्यटन, शहरी बाज़ार और वैश्विक प्रदर्शनियों ने लोक चित्रकला को नई दृश्यता दी। कैनवास अनुकूलन, प्रिंट, फैशन और इंटीरियर डिज़ाइन में उपयोग से आजीविका के अवसर बढ़े; किंतु मानकीकरण और अति-व्यावसायीकरण से मौलिकता पर दबाव भी आया। डिजिटल प्रिंटिंग और NFT जैसे प्रयोग नई संभावनाएँ खोलते हैं परंतु समुदाय.केंद्रित स्वामित्व और नैतिक लाभ.साझेदारी आवश्यक है।

चुनौतियाँ

प्राकृतिक रंगों का ह्रास, शिल्पी-समुदायों का विखंडनए बौद्धिक संपदा उल्लंघन, पर्यावरणीय क्षरण और मध्यस्थों पर निर्भरता प्रमुख चुनौतियाँ हैं। कई बार कलाकार की पहचान ब्रांड में विलीन हो जाती है, जिससे सांस्कृतिक अधिकार कमजोर पड़ते हैं।

संरक्षण, नीति और संस्थागत प्रयास

संरक्षण के लिए दस्तावेज़ीकरण, समुदाय-आधारित प्रशिक्षण, GI टैगए निष्पक्ष बाज़ार तंत्र और शिक्षा-पाठ्यक्रम में समावेश आवश्यक है। संग्रहालय, अकादमिक संस्थान और गैर-लाभकारी संगठन शोध, संरक्षण और प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

शिक्षाए पर्यटन और समुदाय सशक्तिकरण

विद्यालयों में स्थानीय लोक कलाओं का शिक्षण सांस्कृतिक साक्षरता बढ़ाता है। उत्तरदायी सांस्कृतिक पर्यटन स्थानीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ कर सकता हैए बशर्ते लाभ सीधे कलाकारों तक पहुँचे। महिला कलाकारों और युवा पीढ़ी के लिए कौशल-विकास और डिजिटल साक्षरता निर्णायक है।

निष्कर्ष

भारतीय लोक चित्रकला अतीत की स्मृति नहीं, वर्तमान की सृजनात्मक शक्ति है। यह सामुदायिक जीवन, प्रकृति और आस्था के बीच संतुलन का दृश्य कथ्य रचती है। समकालीन चुनौतियों के बीच संरक्षणए नीति और नैतिक बाज़ार ढाँचे के माध्यम से इसकी निरंतरता सुनिश्चित की जा सकती है।

REFERENCES

- Agarwal, S. S. (2012). *Folk Art of India*. National Book Trust.
- Coomaraswamy, A. K. (1994). *The Arts and Crafts of India and Ceylon*. Munshiram Manoharlal. (Original Work Published 1913)
- Ghosh, D. D. (2008). *Folk Arts of India*. Rupa.
- Jain, J. (1998). *Indian Folk Art: The Crafts Museum Collection*. Mapin.
- Kramrisch, S. (2004). *Indian Painting*. Oxford University Press.
- Singh, K. (2015). Museums and the Making of Folk Art. *Journal of Indian Art History*, 12, 45–62.
- UNESCO. (2017). *Safeguarding Intangible Cultural Heritage*. UNESCO Publishing.